1936G Forgiveness for monks and laymen

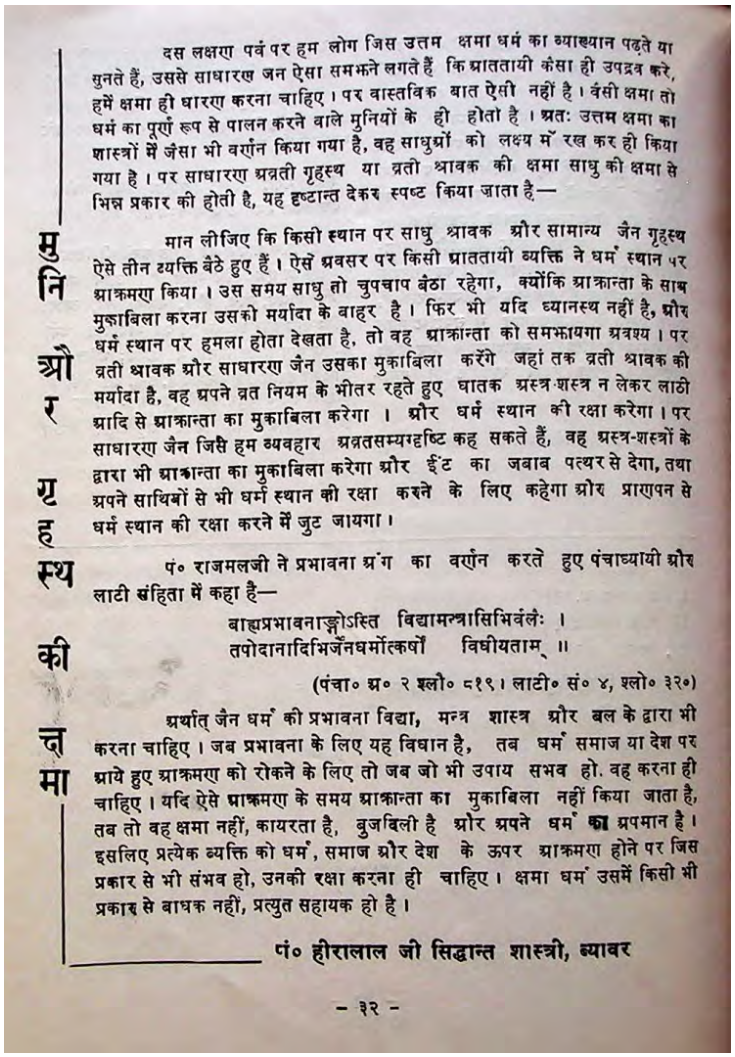

मुनि और गृहस्थ की क्षमा

दस लक्षण पर्व पर हम लोग जिस उत्तम क्षमा धर्म का व्याख्यान पढ़ते या सुनते हैं, उससे साधारण जन ऐसा समझने लगते हैं कि आततायी कैसा ही उपद्रव करे, हमें क्षमा ही धारण करना चाहिए। पर वास्तविक बात ऐसी नहीं है। वैसी क्षमा तो धर्म का पूर्ण रूप से पालन करने वाले मुनियों के ही होती है। अतः उत्तम क्षमा का शास्त्रों में जैसा भी वर्णन किया गया है, वह साधुओं को लक्ष्य में रख कर ही किया गया है। पर साधारण अव्रती गृहस्थ या व्रती श्रावक की क्षमा साधु की क्षमा से भिन्न प्रकार की होती है, यह दृष्टान्त देकर स्पष्ट किया जाता है—

मान लीजिए कि किसी स्थान पर साधु श्रावक और सामान्य जैन गृहस्थ ऐसे तीन व्यक्ति बैठे हुए हैं। ऐसे अवसर पर किसी आततायी व्यक्ति ने धर्म स्थान पर आक्रमण किया। उस समय साधु तो चुपचाप बैठा रहेगा, क्योंकि आक्रान्ता के साथ मुकाबिला करना उसकी मर्यादा के बाहर है। फिर भी यदि ध्यानस्थ नहीं है, और धर्म स्थान पर हमला होता देखता है, तो वह आक्रान्ता को समझायगा अवश्य। पर व्रती श्रावक और साधारण जैन उसका मुकाबिला करेंगे जहां तक व्रती श्रावक की मर्यादा है, वह अपने व्रत नियम के भीतर रहते हुए घातक अस्त्र-शस्त्र न लेकर लाठी आदि से आक्रान्ता का मुकाबिला करेगा। और धर्म स्थान की रक्षा करेगा। पर साधारण जैन जिसे हम व्यवहार अव्रतसम्यग्दृष्टि कह सकते हैं, वह अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा भी आक्रान्ता का मुकाबिला करेगा और ईंट का जबाब पत्थर से देगा, तथा अपने साथिओं से भी धर्म स्थान की रक्षा करने के लिए कहेगा और प्राणपन से धर्म स्थान की रक्षा करने में जुट जायगा।

पं० राजमलजी ने प्रभावना अंग का वर्णन करते हुए पंचाध्यायी और लाटी संहिता में कहा है—

बाह्यप्रभावनाङ्गोऽस्ति विद्यामन्त्रासिभिर्बलैः।
तपोदानादिभिर्जैनधर्मोत्कर्षो विधीयताम्॥

(पंचा० अ० २ श्लो० ८१९। लाटी० सं० ४, श्लो० ३२०)

अर्थात् जैन धर्म की प्रभावना विद्या, मन्त्र शास्त्र और बल के द्वारा भी करना चाहिए। जब प्रभावना के लिए यह विधान है, तब धर्म समाज या देश पर आये हुए आक्रमण को रोकने के लिए तो जब जो भी उपाय सभव हो. वह करना ही चाहिए। यदि ऐसे आक्रमण के समय आक्रान्ता का मुकाबिला नहीं किया जाता है, तब तो वह क्षमा नहीं, कायरता है, बुजदिली है और अपने धर्म का अपमान है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धर्म, समाज और देश के ऊपर आक्रमण होने पर जिस प्रकार से भी संभव हो, उनकी रक्षा करना ही चाहिए। क्षमा धर्म उसमें किसी भी प्रकार से बाधक नहीं, प्रत्युत सहायक हो है।

पं० हीरालाल जी सिद्धान्त शास्त्री, ब्यावर

मुनि और गृहस्थ की क्षमा

दशलक्षण पर्व पर जो हम लोग जिस उत्तम क्षमा धर्म का व्याख्यान पढ़ते या सुनते हैं, उससे साधारण जन ऐसा समझने लगते हैं कि कोई आततायी कैसा ही उपद्रव करे - हमें क्षमा ही धारण करना चाहिए। पर वास्तविकता ऐसी नहीं है, क्योंकि दशलक्षण धर्म के दश अंगों का पूर्ण रूप से परिपालन मुनियों के ही संभव है। अतः उत्तम क्षमा का जो भी वर्णन किया जाता है, वह साधुओं को लक्ष्य में रखकर ही किया गया है। पर साधारण अव्रती गृहस्थ या व्रती श्रावक की क्षमा साधु की क्षमा से भिन्न प्रकार की होती है। इसे दृष्टान्त देकर के स्पष्ट किया जाता है —

मान लीजिए कि किसी धर्मस्थान पर साधु, श्रावक और साधारण जैन गृहस्थ ऐसे तीन व्यक्ति बैठे हुए हैं। ऐसे अवसर पर किसी आततायी व्यक्ति ने धर्मस्थान पर आक्रमण किया। उस समय साधु तो चुपचाप बैठा रहेगा - क्योंकि आक्रान्ता के साथ मुकाबिला करना उसकी मर्यादा के बाहिर है। फिर भी यदि वह ध्यानस्थ नहीं है, और धर्मस्थान पर हमला हो रहा है - तो वह आक्रान्ताओं को समझायेगा अवश्य। यदि उसके समझाने पर भी आततायी लोग शान्त न हों - तो वह चुप हो जायगा। पर व्रती श्रावक और साधारण जैन उनका मुकाबिला करने के लिए तैयार होंगे। जहां तक व्रती श्रावक की मर्यादा है - वह अपने पद के भीतर रहते हुए घातक अस्त्र-शस्त्र न लेकर लाठी आदि से मुकाबिला करेगा - और अपने धर्मस्थान की रक्षा करेगा। तथा साधारण जैन - जिसे शास्त्रीय भाषा में अविरत सम्यग्दृष्टि कह सकते हैं - वह अस्त्र-शस्त्रों के द्वारा भी आततायी का मुकाबिला करेगा। और शस्त्र का जवाब शस्त्र से ही देगा - अपने साथियों को भी धर्मस्थान की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा और प्राणपन से धर्मस्थान की रक्षा करने में जुट जायगा।

पं० राजमल्ल जी ने लाटी संहिता में ~~क्षमा धर्म का विवेचन देते~~ प्रभावना अंग वर्णन करते हुए कहा है —

बाह्यः प्रभावनाङ्गोऽस्ति विद्यामन्त्रादिभिर्बलैः।
तपोदानादिभिर्जैनधर्मोत्कर्षो विधीयताम्॥ (सर्ग ४, श्लो. ३२०)

अर्थात् जैनधर्म की प्रभावना विद्या, मंत्र, शस्त्र और बलप्रयोग से करनी चाहिए। जब प्रभावना के लिए यह विधान है, तब अपने ऊपर हुए आक्रमण को रोकने के लिए तो जो भी संभव उपाय हों वे तो करना ही चाहिए। यदि ऐसे आक्रमण के समय पर उसका मुकाबिला नहीं किया जाता है, तब तो वह क्षमा नहीं, कायरता है, बुजदिली है, और अपने धर्म का अपमान है। इस लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने, अपने कुटुम्ब, ग्राम या देश के ऊपर आक्रमण के समय, धर्मस्थानों के ऊपर होनेवाले हमलों के समय जी-जान से - जिस प्रकार से भी हो - उनकी रक्षा करना ही चाहिए। यही गृहस्थ का धर्म है।

हाँ, पर अविरत सम्यक्त्वी या श्रावक मनुष्य स्वयं पहले किसी के ऊपर आक्रमण नहीं करेगा - पर आक्रमण होने पर कभी पीछे भी नहीं रहेगा। गृहस्थ की क्षमा आत्मरक्षा, कुटुम्बरक्षा और धर्मरक्षा में बाधक नहीं है, ऐसा जानना चाहिए।